झारखंड के जनजातीय विकास में महात्मा गाँधी की प्रसंगिकता

सोनाली सांगा[1]

सारांश

गांधीजी की दूरदर्शिता इतनी प्रखर थी कि वे आज से 100 वर्ष से भी पहले ही भौतिकतावादी सभ्यता में निहित बुराईयों को महसूस कर चुके थे। औद्योगीकृत पश्चिमी समाज की आलोचना करते थे। अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने पश्चिमी सभ्यता को शैतान की संज्ञा दी है। उसके समाधान के लिए अब दुनिया महात्मा गांधी के विचारों को उपयोगी मानकर आशा भरी नजरों से देख रही है और उन्हीं के विचारों को अपनाने से उसका समाधान दिखाई पड़ रहा है। गांधीवाद की अपरिहार्यता वर्तमान समस्याओं के निदान हेतु विश्व के सभी देश मानने लगे हैं। महात्मा गांधी के विचार दिन पर दिन ज्यादा से ज्यादा पढ़ा जाने लगा है और आज के लिए और ज्यादा प्रासंगिक माना जाने लगा है। महात्मा गांधी के जीवन दर्शन ने लोगों का ध्यान खींचा है। ऐसे समय में महात्मा गांधी के जीवन दर्शन और विचार पर जीवन यापन करने वाले के रूप में पहचाने जाने वाले आदिवासी समुदाय के जीवन के बारे में जानने की उत्सुकता लोगों में बढ़ना स्वभाविक है। वर्तमान सभ्यता मशीन आधारित उद्योग प्रधान उपभोक्तावादी है इस सभ्यता ने मानव के सामने विकराल समस्याएँ खड़ी कर दी है, जिसपर नियंत्रण पाना बहुत मुश्किल लग रहा है। तकनीकी और औद्योगिक क्रांति के कारण मनुष्य के स्थान पर मशीनें अपना प्रभुत्व जमाने लगी हैं।

कीवर्ड : किजनजातीय, महात्मा गांधी, आदिवासी समुदाय, आन्दोलन।

भूमिका

दक्षिण अफ्रीका में अपने आन्दोलन की सफलता के बाद 9 जनवरी, 1915 को मोहनदास करमचन्द्र गांधी भारत लौटे। भारत में उनका व्यापक स्वागत किया गया। उन्हें भारत के लोग जानने लगे थे। लेकिन चंपारण में आन्दोलन के बाद महात्मा गांधी को भारत में ज्यादा लोकप्रियता मिली। और यही वह समय है जब आदिवासी समुदाय महात्मा गांधी के बारे में जानने लगे क्योंकि चंपारण का आन्दोलन उसी प्रांत में हो रहा था जहां के आदिवासी समुदाय निवासी थे। इसी दौरान गांधीजी को भारत में किसानों की पीड़ा से पहली बार सामना हुआ। उनका चंपारण में ठहरने से अपने देश के किसानों के जीवन का सीधा अनुभव उन्हें मिला।

आदिवासी समुदाय भी मूल रूप से किसान ही थे तथा वे स्थानीय जमींदारों और शोषकों के खिलाफ आन्दोलन भी 1914 से चला रहे थे। चंपारन आन्दोलन के लिए गांधीजी उत्तरी बिहार के सबसे बड़े शहर मुजफ्फरपुर 11 अप्रैल 1917 को पहुंचें। 20 जून 1917 के शुरूआत में आन्दोलन के दौरान गांधीजी को बिहार की ग्रीष्मकालीन राजधानी रांची में लेफ्टिनेंट गवर्नर से मिलने आना पड़ा था। उस समय लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एडवर्ड गेट थे। रांची वही जिला था, जहां आदिवासी समुदाय की बहुलता थी (आज यह जिला कई जिलों में विभक्त हो गया है- 1983 में रांची तीन जिलों में विभक्त हुआ - रांची, गुमला, लोहरदगाः 22 12 सितंबर, 2007 में पुनः रांची से खूंटी जिले का निर्माण हुआ और गुमला जिला से 30 अप्रैल, 2001 में सिमडेगा जिला बना। ये सभी जिले मिलकर वर्तमान में दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल का गठन करते हैं।

आदिवासी शब्दगांधीजी के एक सहयोगी ठक्कर बापा द्वारा गढ़ा गया था,जिन्होंने गांधीजी के उदाहरण और प्रेरणा पर अपना जीवन आदिवासियों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। जिनका पूरा नाम अमृतलाल विठ्ठलदास ठक्कर था। उनकी पहचान महात्मा गांधी के विचारों पर चलने वाले समुदाय के रूप में की जाती है। आदिवासी महात्मा गांधी के अनुयायी माने जाते हैं। यहां कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक पूरा समुदाय सामान्यतः महात्मा गांधी के विचारों पर चलता है। ऐसे समुदाय दुनिया में विरले ही दिखायी देते हैं। और यह भी की महात्मा गांधी के देहांत के कई दशक बीत जाने और उपभोक्तावादी पश्चिमी सभ्यता का परचम पूरे जोश से पूरी दुनिया में लहरते इस इक्कीसवीं सदीं में आदिवासी समुदाय महात्मा गांधी के विचारों पर चल रहा है। यह बात उनकी ओर सभी का ध्यान आकर्षित करता है।

[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर, इतिहास विभाग, विनोबा भावे, विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड।

जनजातीय आन्दोलन और स्वतंत्रता आन्दोलन में जनजातीय लोगोंके द्वारा सक्रिय भाग लेने के कारण अहिंसक व्यवहार अपनाने के बावजूद उन्हें ब्रिटिश जुल्म का शिकार होना पड़ा। अंग्रेज सरकार ने कृषि भूमि को जिस पर खेती करते थे नीलाम कर दिया। इससे स्वतंत्रता संग्राम में संघर्ष करने हेतु उनके मनोबल में गिरावट के स्थान पर और अधिक प्रेरणा का संचार देखा गया। उन्होंने छोटानागपुर में निवास करने वाली अन्य जनजातियों के समक्ष विशेष रूप से तथा देशवासियों के समक्ष सामान्य रूप से यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि देश की स्वतंत्रता सर्वोच्च मूल्य है जिसे हासिल करने हेतु बड़े से बड़े त्याग की आवश्यकता पड़ती है। त्याग करने का जज्बा सिर्फ शिक्षित और संपन्न वर्ग में ही नहीं होता बल्कि हाशिए पर रहने वाले गरीब जन जनजातीय चाहे वे जनजातीय समुदाय से ही क्यों न हो उनके पास भी त्याग करने का जज्बा होता है। उनका देश प्रेम भी किसी अन्य समुदाय के देश प्रेम से कम नहीं है।

आदिवासी ईमानदार और सीधे-साधे होते हैं। झारखण्डी स्वयं को महात्मा गांधी का अनुयायी मानते हैं इसलिए महात्मा गांधी के प्रमुख सिद्धांत सत्य और अहिंसा' के पालन पर उनका जोर होता है। 'सत्य और अहिंसा का महात्मा गांधी व्यापक अर्थ लगाते हैं। भले ही उस व्यापक अर्थ को जान लोग समझे या न समझे उसके स्थूल अर्थ को वे समझते हैं और हर संभव उसका पालन करते हैं। यह उनके स्वभाव का एक अंग हो गया है। जनजातीय लोग आन्दोलन में हिंसा का सहारा नहीं लेते हैं। महात्मा गांधी से संपर्क में आने से पहले भी उनका आन्दोलन अहिंसक था। लेकिन जब महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े तो उन्हें अहिंसक आन्दोलन का और प्रशिक्षण प्राप्त हुआ क्योंकि महात्मा गांधी अहिंसा के पूजारी थे और उनका सख्त निर्देश था कि आन्दोलन में हिंसा का प्रयोग नहीं हो इस तरह महात्मा गांधी के विचारों के प्रभाव से जनजातीय समुदाय सामान्यतः अहिंसा का पालन करते हैं।

छोटानागपुर की जनजातियों में नशा करने की प्रवृत्ति प्रबलता से रही है। वे हड़िया - शराब आदि का सेवन करते हैं। कई लोग इसे बेचकर पैसा कमाते हैं। जनजातीय लोग महात्मा गांधी के समान मद्यपान के विरोध और मद्यनिषेध के समर्थक हैं। इस तरह के धंधे को नहीं अपनाते हैं।आदिवासी किसी भी तरह के नशीले पेय पदार्थ का सेवन नहीं करते हैं। वे मद्यनिषेध का पालन करते हैं और शराब, हड़िया आदि के बिक्री के भी विरोधी रहे हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान महात्मा गांधी के निर्देशानुसार वे लोग शराब की दुकानों पर धरना भी देते थे जिससे कई जनजातीय लोगोंको जेल की सजाएं भी काटनी पड़ी थी।

मोहनदास करमचन्द गांधी को राष्ट्रीय चेहरा बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रौलट कानून के विरूद्ध अप्रैल 1919 में हुए सत्याग्रह का रहा। जिसमें गांधीजी को संपूर्ण भारत का नेतृत्व करने का मौका दिया। उनके द्वारा बुलाए गए 6 अप्रैल के आम हड़ताल को जनता का व्यापक समर्थन मिला। गांधीजी से भारतीयों में एक नई आशा का संचार हुआ। रौलट कानून के खिलाफ सत्याग्रह ने उन्हें पूरे भारत का चेहरा बना दिया, उन्हें इस उपमहाद्वीप के प्रमुख शहरों और नगरों में जाना जाने लगा। फिर भी महात्मा गांधी को भारत की राजनीति के सर्वोच्च नेता के रूप में 1920-22 के असहयोग आन्दोलन ने ही स्थापित किया।

महात्मा गांधी का भारत के सर्वोच्च नेता के रूप में उदय के संबंध में कलकत्ता के विशेष अधिवेशन के महत्व को जवाहरलाल नेहरू कुछ इस तरह उल्लेख करते हैं, "कलकत्ता के विशेष अधिवेशन ने कांग्रेस की राजनीति में गांधी - युग शुरू किया, जो तब से अब तक कायम है- हां, बीच में थोड़ा-सा समय (1922 से 1929) जरूर ऐसा गया, जिसमें गांधीजी ने अपने-आपको पीछे रख लिया था और स्वराज्य- पार्टी को, जिसके नेता देशबंधुदास और मेरे पिताजी थे, अपना काम करने दिया था। तबसे कांग्रेस की सारी दृष्टि ही बदल गई; विलायती कपड़े चले गये और देखते-देखते सिर्फ खादी - ही खादी दिखाई देने लगी; कांग्रेस में नये किस्म के प्रतिनिधि दिखाई देने लगे, जो खास करके मध्यम वर्ग की निचली श्रेणी के थे। हिन्दुस्तानी, और कभी-कभी तो उस प्रांत की भाषा, जहां अधिवेशन होता था, अधिकाधिक बोली जाने लगी, क्योंकि कितने ही प्रतिनिधि अंग्रेजी नहीं जानते थे। राष्ट्रीय कामों में विदेशी भाषा का व्यवहार करने के खिलाफ भी लोगों के भाव तेजी से बढ़ रहे थे, और कांग्रेस की सभाओं में साफतौर पर एक नई जिन्दगी, नया जोश और सच्चाई दिखाई देती थी।"

जनजातीय लोग प्रथम बार महात्मा गांधी के विचारों के संपर्क में सन् 1920-22 के असहयोग आन्दोलन के दौरान आए और उसी समय से महात्मा गांधी की व्यस्तता भी बहुत बढ़ गयी। इस तरहजनजातीय लोगों का महात्मा गांधी से बहुत कम प्रत्यक्ष संपर्क हो पाया। महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, चर्खा और खादी के सिद्धांत से प्रभावित होकर लोगों ने कांग्रेस में प्रवेश किया और देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई की। टाना भगत जो गया कांग्रेस में आए थे, उससे बहुत प्रभावित हुए। रांची लौटने पर उन्होंने कई सभाएं की। इनमें राष्ट्रीय कांग्रेस के हेतु एक कार्यक्रम निर्धारित किया गया।

गया अधिवेशन में महात्मा गांधी से मिलने की इच्छा अधुरी ही रह गई। बाद में महात्मा गांधी से मिलने का मौका 1925 में प्राप्त हुआ। हरिवंश भगत लिखते हैं कि 1923 ई. (यहां 1925 होना चाहिए क्योंकि 10 मार्च 1922 को महात्मा गांधी को गिरफ्तार करके उन पर सरकार के प्रति असंतोष भड़काने का आरोप लगाया। गांधीजी को छह वर्षों की कैद की सजा सुनाई गई। स्वास्थ्य -संबंधी आधार पर 5 फरवरी 1924 को रिहा कर दिए गए थे।) में महात्मा गांधी रांची पधारे।जनजातीय लोगों ने उनके स्वागत के लिए चरखा अपने अपने कंधों पर ढोकर ले गए थे जिसका उन्होंने प्रदर्शन किया। महात्मा गांधी भोले भाले जनजातीय लोगों को देखकर बहुत खुश हुए। उनके तकलीफों को सूने और बोले कि आप लोगों के सभी प्रकार के दुख दूर होगें। आप लोग चरखें से सूत काटकर खदर पहनों और कांग्रेस का मेम्बर बनो। इसी समय से टाना भगतों ने हार्दिक दिल से कांग्रेस में भाग लिया। उस समय टाना भगतों का साथ श्री पूर्णो चक्र मित्र और रांची के देवकी नन्दन प्रसाद दे रहे थे। टाना भगतों ने गांधीजी के कहने पर खादी पहनी और विदेशी कपड़े की होली जलायी।

1925 के बाद महात्मा गांधी 1927 में झारखंड आयेंः फिर 1934 में अप्रैल के अंत में वे चार दिनों तक रांची रहे. यहां वे काफी व्यस्त रहे। तदुपरांत वे उड़ीसा चले गए। एक बार फिर झारखंड 1940 में कांग्रेस के रामगढ़ के राष्ट्रीय अधिवेशन में ही आ सकें। 6 जून को बड़ी संख्या में जनजातीय लोगों ने जुलूस निकाला और थरपखना से अपर बाजार और अंत में बाजार रोड, पहाड़ी टोला भट्ठी से होते हुए हिन्दपीढ़ी गये।

पं. जवाहरलाल नेहरू को 1929 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस का

अध्यक्ष बनाया गया। इस अधिवेशन में पारित एक प्रस्ताव में पूर्ण स्वराज्य को कांग्रेस का उद्देश्य घोषित किया गया। 31 दिसंबर 1929 को स्वाधीनता का नया नया स्वीकृत तिरंगा झंडा लहराया गया। 26 जनवरी 1930 को पहला स्वाधीनता दिवस घोषित किया गया। तब टाना भगत क्षेत्र में भी इसका प्रभाव पड़ा। रांची में स्वाधीनता दिवस को एक विशाल जुलूस निकाला गया। इसमें अन्य लोगों के साथ स्थानीय संस्थाओं के छात्र एवंजनजातीय समुदाय के लोगों ने भाग लिया। सभा 4 बजे शुरू हुई। स्थानीय कांग्रेस कमिटि के अध्यक्ष डॉ. पी. सी. मित्र ने ''वन्देमातरम'' और ''भारत माता की जय' के नारों के बीच राष्ट्रीय झंडा फहराया। इस अवसर पर दो राष्ट्रीय गीत गाये गये। ये गीत मुजफ्फरपुर के सूरजदेव नारायण सिंह और कलकत्ता के आर. सन्याल के रचे हुए थे।सविनय अवज्ञा आन्दोलन तक जनजातीय समुदाय के लोग कांग्रेस के साथ गहराई से जुड़ गये थे। 1936 तक जनजातीय समुदाय के लोगकांग्रेस के कट्टर समर्थक बन गये थे और कांग्रेस के राष्ट्रीय और स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ उनके संबंध धनिष्ठ हो गए थे। कांग्रेस संगठन में उनका पर्याप्त प्रभाव था। 1937 में हरिवंश भगत को मांडर थाना कांग्रेस कमिटि का सचिव बनाया गया। उसी वर्षझारखण्ड की जनजातीय गोआ भगत रांची जिला कांग्रेस कमिटि के अध्यक्ष बने।

जब 1940 में 19 और 20 मार्च को मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में रामगढ़ में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटि का अधिवेशन हुआ तब अधिवेशन में लाओ भगत, एतवा भगत, सोमा भगत, विश्वामित्र भगत, खबिया भगत और बिशुनपुर, चंदवा, कुडू, घाघरा, ओपा, मांडर के गांवों से बड़ी संख्या में झारखण्ड की जनजातीय लोगों ने भाग लिया।भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू करने से पूर्व अक्टूबर 1940 में महात्मा गांधी ने कुछ चुने हुए व्यक्तियों को साथ लेकर सीमित पैमाने पर सत्याग्रह चलाने का निर्णय किया। महात्मा गांधी ने 1942 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के वर्धा-अधिवेशन में कहा था. ''मेरे लिए अहिंसा एक धर्म है, मेरे जीवन का सार है; लेकिन मैंने हिन्दुस्तान के सामने या किसी भी दूसरे व्यक्ति के सामने सरसरी तौर पर आपसी बातचीत के अलावा कभी इसे धर्म के रूप में रखने की कोशिश नहीं की। मैंने कांग्रेस के सामने इसे राजनीतिक पद्धति के रूप में रखा, जिसका इस्तेमाल राजनीतिक समस्या को सुलझाने के लिए किया जा सकता है।

15 अगस्त, 1942 को 1500 से 2000 की संख्या में जनजातीय लोगों ने बिशुनपुर थाने पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और उस थाने के उप निरीक्षक और सिपाहियों को उनके साथ शामिल होने और सभी सरकारी रिकॉर्ड को जलाने का आह्वान किया। इसके जवाब में पुलिस ने बिशुनपुर कांग्रेस कमिटि कार्यालय में रखे सभी कागजात, नकदी और चावल जब्त कर ताला लगा दिया। कई जनजातीय लोगों को गिरफ्तार किया गया, उन पर जुर्माना लगाया गया और उन्हें अलग-अलग अवधि की कारावास की सजा सुनाई गई। 18 अगस्त को चैनपुर तथा बिशुनपुर थाना के टाना भगतों ने सदर अनुमंडल के बिशुनपुर थाना को जला दिया। उस दिन खूंटी अनुमंडल में बूंडू नामक स्थान पर हड़ताल रही।

निष्कर्ष :

इस तरह से स्पष्ट होता है कि झारखण्ड की जनजातीयों की जीवन-शैली और विचारों पर महात्मा आदिवासी गांधी के सिद्धांतों और विचारों का प्रभाव है। वे गांधीवादी हैं। आदिवासी पहले से गांधीवादी थे जिसे महात्मा गांधी के विचारों ने पुष्ट किया है और उनके आचरण में गांधीवाद के कई तत्वों को जोड़ा है। महात्मा गांधी एक ऐसी जीवन-शैली के पक्ष में थे जो सर्वसुलभ और नैतिक हो। ऐसा जीवन जो भी जीता है चाहे वह महात्मा गांधी को जानता हो या नहीं उसे गांधीवादी जीवन-शैली की श्रेणी में रखा जा सकता है। आदिवासी सामान्यतः एक परंपरा और आदत के रूप में लेकिन चेतना के साथ गांधीवाद को आत्मसात किये हुए हैं। वे महात्मा गांधी से प्रेरित हैं। आदर्श गांधीवादी बनने की भी उनमें प्रेरणा देखी जा सकती है और उन्हें ऐसा बनाया भी जा सकता है।

झारखंड के जनजातियों ने हमेशाअनेक विद्रोहों, सामाजिक आन्दोलनों तथा स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होने के बावजूद, नियंत्रित पैमाने पर ही सही, जनजातीय लोग सामान्य भारतीय जनमानस की चेतना की परिधि तक ही सीमित रहे। यहाँ सदियों से जनजातियों की परंपरागत व्यवस्था स्वायत् रूप में कायम थी। परंपरागत व्यवस्था में छेड़छाड़ और शोषण के खिलाफ यहां की जनजातियों ने हिंसक संघर्ष किया। विदेशी पराधीनता और शोषण के खिलाफ हुए प्रारंभिक लड़ाईयों में झारखंड की जनजातियों के संघर्षों का प्रमुख स्थान है।

संदर्भ :

रामचन्द्र गुहा, *गांधी दी इयर्स दैट चैंज दी वर्ल्ड: 1914-1948,* पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया, गुड़गांव,2018, *पृष्ठ 217*

पी. सी. राय चौधरी, *गजेटियर ऑफ इण्डिया,* बिहार, रांची,1970, *पृष्ठ 112*

वही, *पृष्ठ 131 - 39*

मोहनदास करमचन्द गांधी, *गांधी वाण्ड्मय, खंड -28, (दिनांक - 8:10:1925),* प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1968, *पृष्ठ 224-311*

वही, *पृष्ठ 236*

गांधीजी, हिन्द स्वराज्य, अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी (हिन्दी अनुवाद), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद,1949, *पृष्ठ 75*

वही, *पृष्ठ 76*

हरिराम मीणा, *आदिवासी दुनिया (चुनिंदा मुद्दों पर विमर्श),* राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली,2012, *पृष्ठ 58*

वही, *पृष्ठ 73*

जय एस. सिंह, *महात्मा गांधी के विधिशास्त्रीय सिद्धांतःसत्य, अहिंसा और प्रेम,* दिशा इंटरनेशनल पब्लिसिंग हाउस, ग्रेटर नोयडा,2018, *पृष्ठ 187*

डॉ. बी. वीरोत्तम, *झारखंड: इतिहास एवं संस्कृति,* षष्ठम संस्करण, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2016, *पृष्ठ 139*

वही, *पृष्ठ 142*

टाना भगत एक श्रद्धांजलि, जन-सम्पर्क विभाग, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार सरकार, सचिवालय मुद्रणालय, पटना में मुद्रित,2 अक्टूबर, 1972, *पृष्ठ 214*

नदीम हसनैन, *जनजातीय भारत, आठवां संस्करण,* जवाहर पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2016, *पृष्ठ 87*

परमेश्वरी दयाल, *गांधीयन अप्रोच टू सोशल वर्क,* गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद,1986, *पृष्ठ 96*

वही, *पृष्ठ 99*

पी.सी. राय चौधरी, *पूर्वोक्त, पृष्ठ 119*